REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2023

उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अनूप कुमार पोखरियाल[1] , उषा पांगती[2]
[1]सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, हिमगिरी जी विश्वविद्यालय,देहरादून, उत्तराखंड.
[2]शोध छात्रा (Ph.D.) शिक्षाशास्त्र विभाग, हिमगिरी जी विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड.

सारांश

प्रस्तुत शोध में उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन शोधार्थी द्वारा किया गया है। प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में उत्तराखण्ड राज्य के जनपद देहरादून से उच्च माध्यमिक स्तर के 602 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से लाटरी द्वारा किया गया है। उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही पाया गया है। अपितु उच्च बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों का मध्यमान निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है, जिससे विदित होता है कि उच्च बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि आंशिक रुप से बेहतर है। सम्भवतः निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों में विषयो को रटनें और नकल करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है, जिसके कारण निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्र भी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

शब्द कुन्जी– शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर, बुद्धिलब्धि, उच्च माध्यमिक स्तर.

प्रस्तावना

शिक्षा को मानव जीवन की उन्नति का आधार माना गया है। सचमुच शिक्षा के बिना मानव कल्याण की कल्पना निराधार है। बालकों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा ज्ञाान प्राप्ति का प्रमुख साधन होती है। विद्यालय एक अभिकरण के रूप में बालक को शिक्षा प्रदान करने का प्रमुख स्थान है, एवं बालकों के व्यक्तित्व का निर्माण करने में अध्यापक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जो छात्रों के अन्दर दिये हुए आन्तरिक प्रतिभावों का विकास करते हैं।

अध्यापक द्वारा दिया गया मार्गदर्शन एवं अभिप्रेरणा बालकों के जीवन को नए आयाम प्रदान करते हैं। जिससे उनका भविष्य उज्जवल होनें की अपार सम्भावनाऐं होती हैं। यह कहना उचित ही होगा कि अभिभावकों की भूमिका, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं वातावरण उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर को प्रभावित करतें हैं। अभिप्रेरणा एक ध्यानाकर्षण एवं प्रलोभन की कला है। जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति के अन्दर किसी कार्य को करने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। विद्यालयों का मनो–सामाजिक पर्यावरण भिन्न–भिन्न होता है जो कि नीतियों व अन्तः सम्बन्धो पर निर्भर करता है। विद्यालय के मनोसामाजिक पर्यावरण में अन्तः क्रिया करके ही विद्यार्थी ज्ञानार्जन करता है, जो उसकी शैक्षिक उपलब्धि के रूप में सामने आता है।

अध्ययन का औचित्य

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए चुनी गयी समस्या मुख्य कारण है कि अभी तक शैक्षिक अभिप्रेरणा स्तर पर जो भी अध्ययन हुए हैं, वह माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हुए हैं। शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन, उपलब्धि पर समायोजन, उपलब्धि अभिप्रेरणा व शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक विचार, आत्मप्रत्यय आदि पर अध्ययन हुए हैं।

बुद्धिलब्धि के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा का प्रभाव पड़ता है या नहीं यही जानने का प्रयास प्रस्तुत शोधकार्य में किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

शेखर चन्द और चौधरी प्रिथा, (2017) ने लिंग से सम्बन्धित शैक्षिक उपलब्धि के बीच अन्तरों का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों एवं पुरूष व महिला छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य प्रभावशाली सार्थक अन्तर है। जिससे यह संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा उपलब्धि में अकादमिक एवं लिंग प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। वार्नी और सुलेमान, (2014) ने उपलब्धि अभिप्रेरणा व शिक्षा से सम्बन्धित मानसिक विचार और अकादमिक उपलब्धि के मध्य अन्तर का अध्ययन किया। तोगासिल्प आसनी (2013) नें बैंकाक के गैर सरकारी विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य घटकों का अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यार्थियों के सर्वाधिक सहसम्बन्ध भविष्य की आशाओं व साथ में पढ़नें वाले के मध्य था, एवं अपने द्वारा निर्देशित अधिगम और शैक्षिक उपलब्धि पर उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव सीधे रूप से पड़ता है। तिवारी एवं नैथानी (2011) ने कक्षा 10 के 56 विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के मधुर व्यवहार एवं कम अपेक्षाओं का सार्थक धनात्मक प्रभाव पड़ता है। शर्मा व शर्मा (2011) ने जनपद मण्डी (हिमाचल प्रदेश) के उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर अध्ययन करने पर पाया कि उनकी जूडिशियल थिंकिंग स्टाइल, उनकी शैक्षिक उपलब्धि को तीव्रता से बढ़ा देती है। सोलिमेनिफर ओमिड़ शाबनी, फरजाना और मोरोवत्ती जेकोलह, (2013) नें शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं अकादमिक प्रोत्साहन के मध्य होने वाले सम्बन्धों का अध्ययन किया । इस अध्ययन हेतु न्यादर्श के लिए यादृच्छिक रूप से 150 छात्रों का चुनाव किया गया। इस अध्ययन के परिणामों से यह पता चला कि शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अकादमिक प्रोत्साहन सार्थक भूमिका निभाता है।

उपरोक्त शोध–अध्ययनों के प्राप्त परिणामों से विदित होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके बुद्धि स्तर, आत्म–प्रत्यय, समायोजन थिंकिंग स्टाइल, अध्ययन–आदतों का सार्थक रूप से धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

दुबे (2011) ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह सम्बन्ध होता हैं।

समस्या कथन

उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

उच्च माध्यमिक स्तर

उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा सामान्य रूप से 15 से 17 वर्ष की आयु वर्ग के विद्यार्थियों को दिए जाने वाली शिक्षा हैं। इसके अन्तर्गत कक्षा 11 से 12 तक की शिक्षा दी जाती है।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति से है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्र अपनी बौद्विक योग्यताओं का विकास करतें

है। छात्रों ने किस सीमा तक अपनी बौद्विक योग्यताओं का विकास किया है, यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि का सूचक होता है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर

उपलब्धि का तात्पर्य योग्यता (प्रभावकारिता, क्षमता, पर्याप्तता या सफलता की एक स्थिति या गुणवत्ता) से है। प्रेरणा से तात्पर्य व्यवहार की ऊर्जा (उकसाना) और दिशा (लक्ष्य) से है। इस प्रकार, उपलब्धि प्रेरणा को सक्षमता–प्रासंगिक व्यवहार की ऊर्जा और दिशा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है या लोग सक्षमता (सफलता) की ओर और अक्षमता (असफलता) से दूर क्यों और कैसे प्रयास करते हैं।

शैक्षिक अभिप्रेरणा स्तर से अभिप्राय बालक की रूचि एवं आदतों, शिक्षण कौशल, पाठ्यक्रम, शैक्षिक निर्देशन व प्रेरणा के लिए उत्साहित करना है। अभिप्रेरणा का तात्पर्य किसी कार्य को प्रारम्भ करने, जारी रखने अथवा नियन्त्रित करने की प्रक्रिया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उदेश्यों को शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित प्रकार से निर्धारित किया गया है।

1.उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

2.उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर की तुलना करना। ।

शोध परिकल्पनाए

शोध को सुगम बनाने के लिए शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओ का निर्माण किया गया है।

1.उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

2.उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध अध्ययन विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में उत्तराखण्ड राज्य के जनपद देहरादून से उच्च माध्यमिक स्तर के 602 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से लाटरी द्वारा किया गया है।

सारणी–1
विद्यार्थियों की संख्या

विद्यार्थी	छात्र	छात्राएं	कुल संख्या
शहरी	125	177	302
ग्रामीण	124	176	300

अध्ययन हेतु शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में आंकड़ो के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. डॉ0 एस0एस0 जलोटा निर्मित सामुहिक योग्यता परीक्षा (72)
2. शर्मा टी0आर0 निर्मित अभिप्रेरणा परीक्षण (Revised 2006)
3. विद्यार्थियों के कक्षा 10 (सत्र 2016–17) की शैक्षिक उपलब्धि की सूची का प्रयोग किया गया ।

सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या

बुद्धिलब्धि	उच्च बुद्धिलब्धि	औसत बुद्धिलब्धि	निम्न बुद्धिलब्धि	कुल संख्या
	290	48	264	602

H0.1 उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

सारणी- 3

उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान मानक विचलन और t- मूल्य के पदों में तुलना

बुद्धिलब्धि (I.Q)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	t- मूल्य	सार्थकता स्तर (0.01)
उच्च बुद्धिलब्धि	290	269.82	55.65	0.69	असार्थक Not Significant
निम्न बुद्धिलब्धि	264	267.90	57.56		

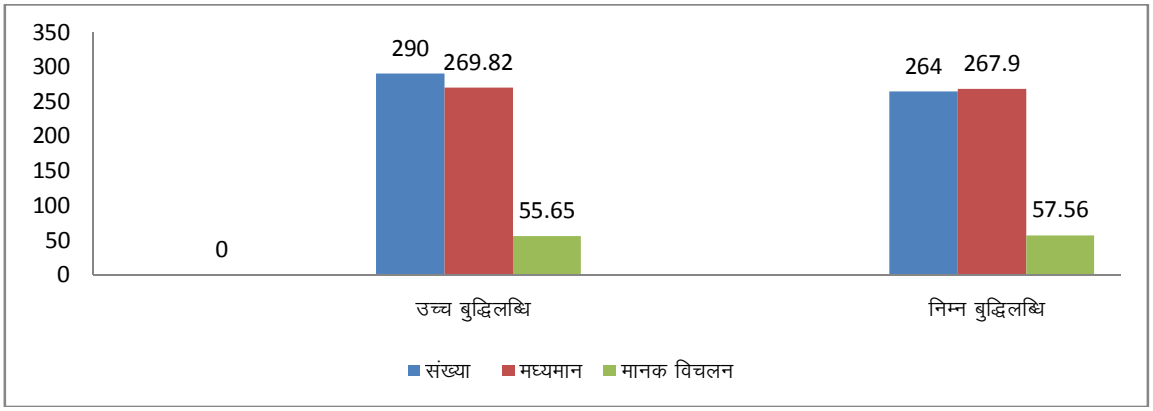

रेखाचित्र 1

सारणी व रेखाचित्र से विदित होता है कि उच्च बुद्धिलब्धि वाले 290 विद्यार्थियों के प्राप्ताकों का मध्यमान 269.82 तथा निम्न बुद्धिलब्धि वाले 264 विद्यार्थियों के प्राप्ताकों का मध्यमान 267.90 है। उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन क्रमशः 55.65 व 57.56 है। तथ्य गणना में उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्त अंको से 'टी' मूल्य 0.69 प्राप्त हुआ जो कि सार्थक अन्तर हेतु आवश्यक 'टी' मान 0.01 स्तर के सारणी मान (स्वातंत्र्य संख्या 552) 2.58 से कम है। अतः प्राप्त 'टी' मूल्य 0.69 इस बात को सिद्ध करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही हैं, इसलिए परिकल्पना स्वीकृत हो रही हैं। उच्च बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों का मध्यमान, निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों के प्राप्ताकों के मध्यमान से

अधिक पाया गया। इससे विदित होता है कि उच्च बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि आंशिक रुप से बेहतर है।

सम्भवतः निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों में विषयो को रटनें और नकल करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है, जिसके कारण निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी भी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं।

H0.2 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत उच्च एवं निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी- 3

उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर के मध्यमान, मानक विचलन और t-मूल्य के पदों में तुलना

बुद्धिलब्धि (I.Q)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	t- मूल्य	सार्थकता स्तर (0.01)
उच्च बुद्धिलब्धि	290	27.81	4.26	0.68	असार्थक Not Significant
निम्न बुद्धिलब्धि	264	26.27	3.34		

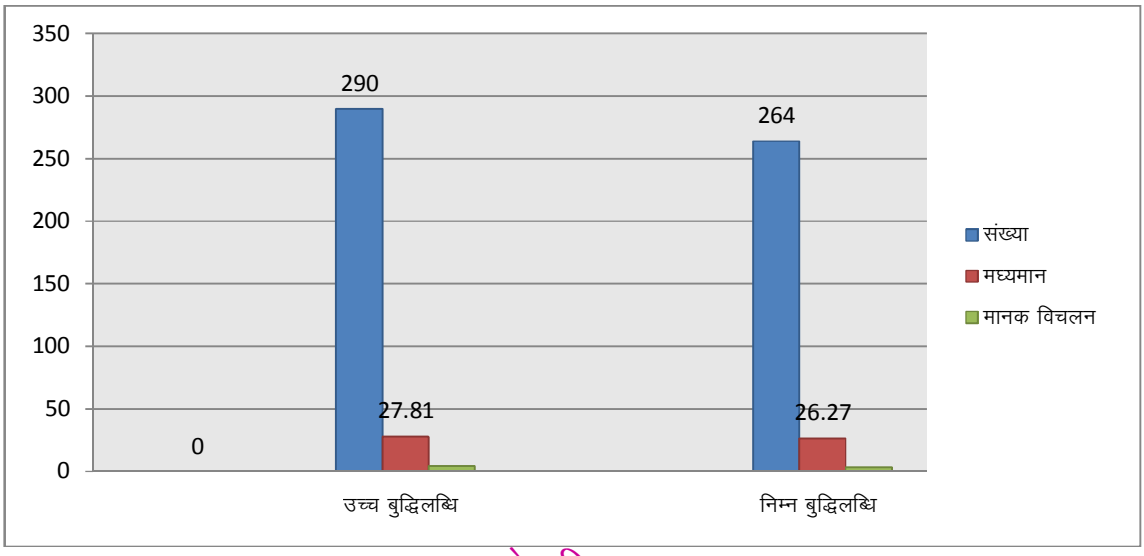

रेखाचित्र 2

सारणी व रेखाचित्र से विदित होता है कि उच्च बुद्धिलब्धि वाले 290 विद्यार्थियों के प्राप्ताकों का मध्यमान 27.81 तथा निम्न बुद्धिलब्धि वाले 264 विद्यार्थियों के प्राप्ताकों का मध्यमान मध्यमान 26.27 है। उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर का मानक विचलन क्रमशः 4.26 व 3.34 है। तथ्य गणना में उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर के प्राप्त अंको से 'टी' मूल्य 0.68 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थक अन्तर हेतु आवश्यक 'टी' मान 0.01 स्तर के सारणी मान (स्वातंत्र्य संख्या 552) 2.58 से कम है। अतः प्राप्त 'टी' मूल्य 0.68 इस बात को सिद्ध करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही हैं। इसलिए परिकल्पना स्वीकृत हो रही हैं।

निष्कर्ष एवं विवेचना

उपर्युक्त परिणामों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

1–उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही पाया गया है। सम्भवतः निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों में विषयो को रटनें और नकल करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है, जिसके कारण निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्र भी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर लेते हैं।

दुबे (2011) ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह – सम्बन्ध होता हैं।

शर्मा तृषा (2019) नें उच्च शैक्षिक उपलब्धि तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि के विद्यार्थियों के मध्य बुद्धि के आयामों की तुलना की। इस अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के बुद्धि एवं उनके सभी आयामों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

2–उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च एवम् निम्न बुद्धिलब्धि वाले छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

सिंह (2017) ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया

BIBLIOGRAPHY/ REFERENCES

- Bharagava, V.P. (2009). Achievement Motive Test. Agra: National Psychological Corporation
- Bhatnagar, Suresh. (2006). Development of Education in India, Agra: Lal Book Depot
- Asthana, Bipin. (2008). National Research and Statistics. India, Agra: Jyoti Printing Press.
- Shekhar Chand & Chaudhary. (2017). Relationship of Academic Achievement of Students with thinking style. *Indian Journal of Psychology and Education , 42* (2), 138-143.
- Twari Jyoti and Naithani Rekha. (2011). Impact of Parent Child Relationship on Scholastic
- Achievement of Adolesents. *Indian Journal of Psychology anf Education , 42* (2), 23-25.
- Pandey, R. (2017). *Bhasha aur Shiksha.* (Agra. Vinod Pustak Mandir, Ed.)
- Sulemaan, (2003). Relationship between SES and Academic Achievement of Adolesents. *Psycho-Lingua , 39* (2), 182-186.
- Sharma, K., & Sharma. (2011). Relationship of Academic Achievement of Students with thinking style. *Indian Journal of Psychology and Education , 42* (2), 138-143.
- Tagasilp. (1987). A Correlation Study of Intelligence and Academic Achievement of High School Pupils. *The Programme of Education , 51* (6), 109-112.
- Tripathi & Pannu. (2011). Interactive Infuence of Adjustment and Gender on Academic Achievement of Senior Scondary Class Students. *Pscho-Lingua , 42* (2), 143-148.
- Twari Jyoti and Naithani Rekha. (2011). Impact of Parent Child Relationship on Scholastic Achievement of Adolesents. *Indian Journal of Psychology anf Education , 42* (2), 23-25.